

श्रीजनकपुर से किशोरीजी की विदाई

नवाँ प्रेमी-(उमंग से आशीष देकर) श्रीमहरबान
मालिक ! आपके कृपा प्रसाद से सारा सत्संगसमाज रस राज के
क्षीरसागर में डूब-उतरा रहा है । मैं भी अपने साई का मंगल
मनाकर श्रीजनकपुरी के राजमहल में जा पहुँचा । आज तो यहाँ
का सब दृश्य ही बदल गया है । रनिवास के दास-दासियाँ
सब अत्यन्त व्याकुल हैं । अपने-अपने काम में तो सब लगे हैं;
परन्तु आँखों से आँसू की बूँदे भी ढुलक रही हैं । अच्छा, आज
श्रीस्वामिनीजी की विदाई का दिन है । श्रीजनकनन्दिनी अवधेश-
पुत्रवधू श्रीकिशोरीजी दुलहिन के वेश में सुन्दर सिंहासन पर
विराजमान हैं । माता श्रीसुनयनाजी और राज परिवार के सब
लोग उनके पास बैठे हैं । श्रीकृपानिधान-स्वामीजू सहचरी रूप-
में उनपर पंखा झल रहे हैं और मधुर-मधुर वचनों से आश्वासन
दे रहे हैं । माता सुनयना के नेत्रों से मोती बिखर रहे हैं और
वे अपनी प्यारी सुकुमारी राजदुलारी प्रिय पुत्री से व्याकुलता
मिश्रित स्वर से कुछ कहती जा रही हैं । क्या कह रही हैं-
“वैदेही, बेटा नेक अपनी माँ की ओर तो देखो ! मुझे भूल न
जाना, लाली ? मुझ निर्धन की एक तुम्हीं धन हो । मुझ
अन्धी की तुम एक लकड़ी हो । इस वृद्धा की तुम एकमात्र
सहारा हो । तुम्हारे बिना इस आँगन में अँधेरा छा जायेगा ।
सारा घर सूना-सूना हो जायेगा । बिना मणि के फणि के समान
मेरे दिलका कोना-कोना तुम्हारे बिना तड़प रहा है । यह घर

तुम्हारे मधुर वचन और पवित्र लीलाओं से भरा हुआ है ।
तुम्हारे बिना मैं इसमें कैसे रहूँगी ? तुम्हारी तोतली वाणी से
‘माँ, माँ, की मधुर गुंजार सुने बिना मैं कैसे जीवन व्यतीत
करूँगी ? मैं सबेरे-सबेरे उठकर किसके लिये कलेऊ बनाऊँगी ?
किसको गोद में बिठाकर खिलाऊँगी ? इस आँगन में अपनी
छोटी-छोटी बहिनों के साथ कौन खेलेगा ? किसकी मृदु
मुस्कान की मधुर चाँदनी से मेरे घर के पशुपक्षी और जड़ तक
चमक उठेंगे ? हाय-हाय ! अब मेरा समय कैसे कटेगा ?”
माता श्रीसुनयनादेवी अधीर होकर धरती पर लोटने लगी ।
श्रीकिशोरीजी ‘माँ, माँ, कहकर उनसे लिपट गयी और रोने
लगीं । सखी वेश में साईं भी दौड़ आये और गुलाब जल से
सिंचन करके मैया को सावधान करने लगे । सचेत होकर
श्रीसुनयना मैया श्रीकिशोरीजी का मस्तक सूँघने लगीं और बार-बार
हृदय से लगाकर दुःखी होने लगीं । उनका दिल फटने लगा ।
“हाय हाय ! आज तुम चली जाओगी बेटी ? घर के तोता
मैना तो तुम्हारे लिये विकल हो रहे हैं । मैं क्या करूँ बेटी ?”

उसी समय विदेह नरेश भी वहाँ आ गये । श्रीकिशोरीजी
‘बाबा, बाबा’ कहकर उनके हृदय से लिपट गयीं । बाबा का
विदेहपना बिसर गया । उनके ममता भरे आँसुओं की झड़ी से
श्रीजू की ओढ़नी भीग गयी । वे सावधान होकर बोले-“मेरे
लाल, अधीर मत होओ ! मैं शीघ्र ही लक्ष्मी निधि को भेजकर
तुम्हें बुला लूँगा ।” उसी समय राजगुरु श्रीशतानन्दजी ने

कहा-“पिताजी ने अपनी अनुराग की अश्रुधारा से तुम्हारा अभिषेक किया है । सुहागिनी ! तुम्हारा सुहाग अविचल रहे । रथ पर बैठने का यही शुभ मुहूर्त है, शीघ्रता करो !” पुनः एकबार सब से मिलकर श्रीजू रथपर विराजमान हुईं । रथ चलते ही फिर वे माता-पिता के वियोग से घबरा उठीं और ‘माँ, माँ’ पुकारने लगीं । अपनी बच्ची के शब्द सुनकर मैया और भी व्याकुल हो गयीं और बछड़ों से बिछुड़ी व्याकुल गौ के समान डकारती हुई सखियों से अपना हाथ छुड़ाकर अत्यन्त व्याकुलता से नंगे पाँव रथ की ओर दौड़ीं । सिर के वस्त्र की भी सम्भाल नहीं रहीं । उनकी यह दशा देखकर श्रीरामभद्र आतुरता से रथ से उतर पड़े और उन्हें अपने साथ बिठा लिया । बार-बार प्यार से अपनी बच्ची का मुख चूमने लगीं और रघुनन्दनदेव से बोलीं -“बेटा ! मैं तब लौट के आऊँगी जब तुम मुझे वचन दोगे कि मैं जानकी को अपने से अलग नहीं करूँगा, सब प्रकार से उन्हें सुखी रखूँगा । मेरे सामने मेरी इस लली से मधुर भाषण करो । मुझे सुख पहुँचाओं ।” श्रीरामभद्र बोले- “मैया, तुम्हारी आज्ञा मेरे सिर आँखों पर है । यह तो मेरी आत्मा हैं, प्राण हैं । मैं इन्हें कभी अपने से अलग न करूँगा इनका सुख ही मेरा सुख हैं । इनका जीवन ही मेरा जीवन है ।” इसके बाद श्रीरामचन्द्र ने स्वामिनीजी की ओर देखकर कहा- “प्रिये, तुम इतनी अधीर क्यों हो रही हो ? जैसे तुम्हारी मैया है, ऐसी ही मेरी मैया भी करुणा और स्नेह की मूर्ति है,

वात्सल्य स्नेह की निधि है । उनके मधुर अनुराग की तो बात ही क्या, उनके दर्शन संसर्ग और आलाप से ही तुम्हें बहुत सुख होगा ।” इस प्रकार अपनी प्राण प्रिया से मधुर वचन कहकर सास को धैर्य बँधाया, सुखी किया । श्रीसुनयना मैया ने बड़े प्यार से दुलार से अपनी पुत्री और जामाता को गले लगाया । कुछ खिलाया-पिलाया । जब श्रीरामभद्र ने यह कहा कि-
“मैया, हम दोनों सर्वदा तुम्हारी गोद में खेलते रहेंगे, तब आनन्द और ममता से उनका हृदय भर आया और वे आशीर्वाद देकर लौट आयीं ।”

इसके बाद मैंने देखा और बड़े आश्चर्य से देखा-अरे यह तो जनकपुर नहीं, श्रीअयोध्या है । यहाँ के घर-घर में, गली-गली में, राजमहल के कोने-कोने में, कण-कण में, आनन्द का समुद्र लहरा रहा है । महाभाग्यवती श्रीकौशल्यामैया की गोद में उनकी शीलवती पुत्रवधू सतीगुरु श्रीवेदवतीजी अचल सुहाग की ज्योति के रूप में जगमगा रही हैं और हमारे प्यारे बाबल साईं मंगलमयी खील और प्रसूनवर्षा करते हुए युगल का मंगल मना रहे हैं । “यह युगल जोड़ी जुग-जुग जिये ! इनके सुहाग-भाग अचल रहें । इस प्रकार आशीर्वाद दे रहे हैं ।